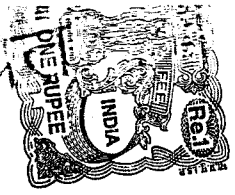
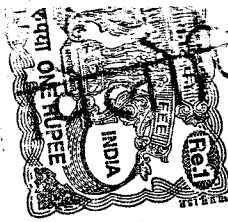


46



वेदिका
1

न्यायालय: माननीय राजस्व मण्डल म0प्र0 ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक

/2014 पुनरीक्षण R-1609-III-14

श्री ~~राजाबाई पत्नी श्री नाथूराम यादव~~
द्वारा आज दि. 27/6/14
प्रस्तुत
~~राजाबाई पत्नी श्री नाथूराम यादव~~
राजस्व मण्डल म0प्र0 ग्वालियर

नीरजसिंह पुत्र जसवन्तसिंह व्यवसाय-
प्राइवेट सर्विस, निवासी- ग्राम डोंगरपुर,
तहसील घुहारा, छतरपुर,

— आवेदक

बनाम

1. श्रीमती राजाबाई पत्नी श्री नाथूराम यादव
निवासी- ग्राम भर्सखेरा (बमनौराकला)
2. म0प्र0 शासन — अनावेदकगण

पुनरीक्षण अन्तर्गत धारा 50 म0प्र0 भू-राजस्व संहिता 1959 विरुद्ध
आदेश दिनांक 10/07/2012 पारित द्वारा राजस्व निरीक्षक वृत्त
घुहारा तहसील घुहारा जिला छतरपुर, के प्रकरण क्रमांक
27/अ-12/11-12 व उनवान श्रीमती राजाबाई बनाम म0प्र0
शासन

माननीय महोदय,

आवेदक की ओर से पुनरीक्षण निम्नलिखित आधारों पर
प्रस्तुत है:-

1. यहकि, अधीनस्थ तहसील न्यायालय का विवादित आदेश एवं सीमांकन
की कार्यवाही अवैध अनुचित अनियमित होने से निरस्त किये जाने
योग्य है।
2. यहकि, ग्राम सेवार की विवादित भूमि सर्वे क्रमांक 1205/2,
1210/1, 1210/2, 1211 कित्ता 4 रकवा 2.838 हैक्टर भूमि आवेदक
नीरजसिंह एवं उषा देवी पत्नी सूरजसिंह ने विक्रेता राजवीरसिंह एवं

M



वि

म.प्र.)

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक. R. 1609. III. 14 जिला कतरपुर

| स्थान तथा दिनांक | कार्यवाही तथा आदेश | पक्षकारों एवं अधिभाषकों आदि के हस्ताक्षर |
|------------------|--|--|
| 8-9-15 | <p>राजस्व राजावाड़</p> <p>प्रकाश में आवेदक को को से शसके. सीमांत उप आवेदक अभि. के प्रकाश में सुना गया।</p> <p>आवेदक अभि. का अपने तर्क में वही तर्क प्रस्तुत किए जो निगामी गैरी के अंकित थे जिसे महं दुखमा ही जा रहा है किंतु बिचार में विषाजा रहा है। आवेदक अभि. का अभिलेख के आधार पर निर्णय लेने का निवेदन किया गया।</p> <p>प्रस्तुत तर्क के संबंध में अधीनस्थ -पायालय के अभिलेख का अवलोकन किया गया। प्रकाश में दिनांक 14-8-15 को राजस्व प्रकाश में आवेदक अभि. के अवेद्यत किया गया था कि राजस्व निरीक्षक का अवेद्य दिनांक 10-9-12 से निगामी प्रस्तुति दिनांक 27-5-14 तक के विवरण का प्रत्येक दिवस का हिसाब प्रस्तुत करने हेतु आवेदक अभि. को समझ दिया गया था, जिसे पेशी दिनांक 8-9-15 नियत की गई थी। नियत पेशी पर आवेदक अभि. का आदेशानुसार विवरण से निगामी प्रस्तुत करने का प्रत्येक दिवस का कोई हिसाब प्रस्तुत ही किया गया। सिर्फ रिकॉर्ड के आधार पर निर्णय लेने का निवेदन किया गया।</p> <p>आवेदक मध्यम शासन के अभि. का लिखित तर्क प्रस्तुत का निवेदन किया कि किसी भी अवेद्य के विरुद्ध निगामी निर्धारित समय 30 दिवस में प्रस्तुत ही की गई है इससे अवेद्य के एक वर्ष 10 माह जैसी लम्बी अवधि का विवरण हुआ है जिसका प्रत्येक दिवस का विवरण का लेखा भी प्रस्तुत ही किया गया है। निगामी अवधि वास्तव</p> | |

| स्थान तथा दिनांक | कार्यवाही तथा आदेश | पक्षकारों एवं अभिभावकों आदि के हस्ताक्षर |
|------------------|---|--|
| | <p>होने से निगामी निरस्त करने का निवेदन किया गया।</p> <p>प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया तथा -</p> <p>- प्रायालय के अभिलेख का अवलोकन किया गया। अवलोकन से प्रथमतः तो - प्रायालय के आदेश दिनांक 14.8.15 के फाइनल में प्रत्येक दिवस के विवरण का लेखा प्रस्तुत ही किया गया जो एक वर्ष 10 माह का अवधि विवरण है। जो अक्षय है। अधीनस्थ - प्रायालय के अभिलेख अवलोकन से यह स्पष्ट हो रहा है कि बीमांकन में अनिर्वाह बीमा चिह्नों को आधा बनाया बीमांकन किया गया है। आपत्तियों का भी निराकरण करने का उद्देश्य आक्षेपित आदेश दिनांक 10.7.12 में किया गया है। सिर्फ यह तथ्य विवादित है कि दिनांक 4-7-12 को किये गये बीमांकन कार्यवाही के दौरान आवेदक के वृत्तना होने से वह उपाक्षिप्त भी हो सका है।</p> <p>उपरोक्त वर्णित परिस्थितियों में बीमांकन दिनांक 4-7-12 तथा उसका पुनर् आदेश दिनांक 10.7.12 को स्थगित किया जाकर अधीनस्थ निरीक्षण के आदेशित किया जाता है कि वे आवेदक सहित समस्त रिटबद्ध सरकारी कर्मियों को सूचना पत्र देकर उनकी उपाक्षिप्ति में बीमांकन की कार्यवाही पूर्ण करें। पुनः बीमांकन की कार्यवाही 3 माह में पूर्ण करें। यह निगामी उक्त निर्देशों के साथ समाप्त की जाती है।</p> <p style="text-align: right;">सदस्य</p> | |